लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

रामभक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि – तुलसीदास

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

1. गोस्वामी तुलसीदास

जन्म - 1532 ई. (अभुक्त मूल नक्षत्र)

जन्मस्थान - (i) डॉ. नगेन्द्र के अनुसार - राजापुर (उ. प्र.)
(ii) आधुनिक शोध कर्ताओं के अनुसार - सौरों (उ. प्र.)

नोट :- इनका जन्मस्थान सौरों मानने वाले सर्वप्रथम विद्वान श्री गौरीशंकर द्विवेदी माने जाते हैं। इनके द्वारा रचित 'सुकवि सरोज' (1927 ई.) रचना में इसका उल्लेख किया गया है।

मृत्युकाल - 1623 ई.

इनके पिता का नाम - आत्माराम दुबे
माता का नाम - ~~तुलसी~~ हुलसी

तथ्य - "सुरतिय नरतिय नागतिय सब चाहति अस कोय।
गोद लिए हुलसी फिरैं तुलसी सो सुत होय ॥" → रहीम

पालन पोषण कर्त्री - दासी चुनिया / मुनिया

इनके गुरु का नाम - (i) बाबा नरहरिदास (नरहर्यानंद)
(ii) शेष सनातन

नोट :- बाबा नरहरिदास से तो इनको राम की कथा का ज्ञान प्राप्त हुआ था तथा 'शेष सनातन' से इनको वेद, वेदांग, पुराण, इतिहास, दर्शन, ज्योतिष इत्यादि शास्त्रीय विषयों का ज्ञान प्राप्त हुआ था।

बचपन का नाम - रामबोला (इनको तुलसी नाम सर्वप्रथम बाबा नरहरिदास के द्वारा प्रदान किया गया था)

पत्नी का नाम - रत्नावली

नोट:- इनकी पत्नी रत्नावली भी अपने समय की प्रसिद्ध विदुषी थी इनकी प्रेरणा से ही तुलसीदास को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।

(i) " लाज न आवत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक् धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहु मैं नाथ ॥"

(ii) " अस्थि चर्ममय देह मम, तामें ऐसी प्रीति।
वैसी जो श्रीराम महँ, होती न तो भव भीति ॥"

प्रमुख रचनाएँ → तुलसीदास के द्वारा रचित रचनाओं के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद माने जाते हैं यथा -

क्र. सं.	रचनविद्वान का नाम	तुलसीद्वारा रचित रचनाओं की संख्या
1.	बाबा बेनी माधवदास	→ 13
2.	ठाकुर शिवसिंह सेंगर	→ 18
3.	जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन	→ 21
4.	मिश्रबन्धु	→ 25 (प्रामाणिक-12 अप्रामाणिक-13)
5.	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज रिपोर्ट के अनुसार	→ 37 (प्रामाणिक-12 अप्रामाणिक-25)
6.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	→ 12

वर्तमान में तुलसीदास जी के प्रामाणिक रचनाओं की संख्या 12 ही मानी जाती है इन बारह रचनाओं में से पांच रचनाएं बड़े ग्रंथ के रूप में तथा 7 रचनाएं छोटे ग्रंथ के रूप माने गए हैं। यथा

(क) पाँच बड़े ग्रंथ

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकाल	भाषा
1.	रामगीतावली (गीतावली)	1571 ई.	ब्रज
2.	रामचरित मानस	1574 ई.	अवधी
3.	राम विनयावली (विनयपत्रिका)	1582 ई.	ब्रज
4.	दोहावली	1583 ई.	ब्रज
5.	कवित्त कवितावली	1612 ई.	ब्रज

(... रामायण)

(ख) सात छोटे ग्रंथ →

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकाल	भाषा
1.	कृष्ण गीतावली	1571 ई.	ब्रज
2	रामलला नहछू	1582 ई.	अवधी
3	पार्वती मंगल	1582 ई.	अवधी
4.	जानकी मंगल	1582 ई.	अवधी
	(मिथिला में रचना किये नहछू मंगल दोम)		
5	वैराग्य संदीपनी	1612 ई.	ब्रज
6.	बरवै रामायण	1612 ई.	अवधी
7.	रामाज्ञा प्रश्नावली	1612 ई.	ब्रज व अवधी

अन्य विशेष तथ्य →

1. अपने किसी अनर्थ के विनाश के लिए इन्होंने हनुमान की भक्ति में हनुमानबाहुक नामक एक अन्य रचना भी लिखी थी। परन्तु पं. रामगुलाम द्विवेदी के अनुसार यह रचना वर्तमान में कवितावली रचना का ही एक अंश माने गये हैं।
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्लने इनको 'हिन्दी का जातीय कवि' कहकर पुकारा है। ✓ रामविलास शर्मा
3. 'रामचरितमानस' रचना के लेखन के कारण भक्तमाल के रचियता नाभादास ने इनको 'कलिकाल का वाल्मिकी' कहकर पुकारा है।
4. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने इनको 'महात्मा बुद्ध के बाद दूसरा बड़ा लोकनायक' कहकर पुकारा है।
5. एक अन्य पाश्चात्य विद्वान विंसेंट स्मिथ महोदय ने इनको 'मुगल काल का सबसे बड़ा आदमी / महान् व्यक्ति' कहकर पुकारा है।
6. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इनकी प्रशंसा करते हुये लिखा है "अपरिमित धैर्य लेकर के एक पुत्र पैदा हुआ था

जिसने भारत में समन्वय का कार्य किया।
इनका काव्य दो कोटियों को मिलने वाला था।"

7. डॉ० मधुसूदन सरस्वती ने इनको 'आनन्द कानन का वृक्ष' कहकर पुकारा है। यथा
"आनन्द कानने कश्चित् जंगमस्तुलसी तरू:।
कविता मंजरी यस्य राम भ्रमर भूषिता ॥"

→ 8. तुलसीदास जी से पहले हिन्दी साहित्य में निम्नलिखित प्रकार की रचना शैलियां/पद्धतियां देखने को मिलती थी यथा -
(1) छप्पय पद्धति → वीरगाथा काव्य/रासो साहित्य में।
(2) गीत पद्धति → विद्यापति व सूरदास के पदों में।
(3) कवित सवैया पद्धति → 'गंग भाट' आदि कवियों के पदों में।
(4) दोहा चौपाई पद्धति → प्रेमाख्यानक रचनाओं में (सूफी काव्य में)
(5) सूक्ति पद्धति → नीति काव्यों में।

परन्तु तुलसीदास जी की रचनाओं में इन सभी पद्धतियों का एक साथ प्रयोग देखने को मिल जाता है।

→ तुलसीदास मूलत: स्मार्त वैष्णव भक्त कवि माने जाते हैं अपनी रचनाओं में इन्होंने प्रमुखत: निम्न पाँच देवताओं की स्तुति की गई है।
(1) विष्णु (2) शिव (3) सूर्य (4) गणेश (5) दुर्गा

→ तुलसीदास की रचनाओं के संदर्भ में विशेष तथ्य →

1. रामचरितमानस - यह तुलसीदास जी की सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना मानी जाती है
महाकाव्य श्रेणी की यह रचना 1574 ई० (1631 वि०) में रचित

2. विनयपत्रिका → (राम विनयावली)

→ ब्रज भाषा में रचित यह रचना 1582 ई. में लिखी गई थी

Teacher's Signature...........

115

गीति

→ ~~हिन्दी~~ शैली में रचित इस रचना में कुल 279 पद लिखे गये हैं।

→ इस रचना में तुलसीदास के स्वयं के जीवन का वर्णन भी प्राप्त होता है जिसके कारण कहा जाता है कि

"तुलसी के राम को जानने के लिये रामचरितमानस को पढ़ना चाहिए तथा स्वयं तुलसी को जानने के लिए विनयपत्रिका को पढ़ना चाहिए"

→ तुलसीदास ने यह रचना राम के दरबार में आत्म निवेदन भेजने की इच्छा से लिखी थी।

→ इस रचना के लेखन का मुख्य उद्देश्य कलिकाल से मुक्ति प्राप्त करना माना जाता है।

→ इस रचना में कुल 21 प्रकार की रागों का प्रयोग हुआ है

→ इस रचना में भी शांत रस की प्रधानता मानी जाती है।

3. गीतावली (रामगीतावली)

→ इस रचना में भी ब्रज भाषा एवं गीति शैली का प्रयोग किया गया है।

→ इस रचना में कुल 328 पद लिखे गए हैं।

→ यह तुलसीदास द्वारा रचित सर्वप्रथम रचना भी मानी जाती है।

→ इस रचना के कुछ पदों में सूरदासजी द्वारा रचित सूरसागर ग्रंथ की शैली का प्रयोग भी देखने को मिलता है इस रचना में भी 21 प्रकार की रागों का प्रयोग हुआ है

4. कवितावली →

→ कवित्त-सवैया शैली में रचित इस रचना में कुल-325 पद लिखे गए हैं।

→ कुछ समीक्षकों के अनुसार यह तुलसीदास की सबसे अंतिम रचना भी मानी जाती है

Teacher's Signature............

→ रामचरितमानस की तरह इस रचना को भी 7 काण्डों में विभाजित किया गया है।

→ इस रचना में वीर, रौद्र एवं भयानक रसों की प्रधानता मानी जाती है।

→ इस रचना में तुलसीदास जी ने लंका दहन का अत्यधिक सुन्दर वर्णन किया है इसको देखकर यह लगता है कि इन्होंने अपने जीवन में कोई वास्तविक भयंकर अग्नि अग्निकाण्ड अवश्य देखा होगा।

5. दोहावली →

→ दोहा शैली में रचित इस रचना में कुल 573 पद लिखे गए हैं।

→ इस रचना में चातक पक्षी को माध्यम बनाकर प्रेम की अनन्यता का संदेश दिया गया है।

6. कृष्ण गीतावली →

→ ब्रज भाषा में रचित इस रचना में कुल 61 पद लिखे गए हैं।

→ यह रचना 1571 ई० में रामगीतावली के साथ ही रचित रचना मानी जाती है।

→ इस रचना में सूरदासजी के भ्रमरगीत परम्परा का निर्वहन भी किया गया है।

7. रामलला नहछू →

→ यह तुलसी दास जी के विवाह गीतों से सम्बन्धित रचना मानी जाती है इस रचना में इन्होंने विवाह के अवसर पर गाई जाने वाली कुल-20 गीत लिखे हैं।
ये सभी गीत 'सोहर' छंद में लिखे गए हैं।

नोट:- 'सोहर' मात्रिक छंद होता है इसलिए इसके प्रत्येक चरण में 22 मात्राएँ होती हैं तथा क्रमशः 12, 9

10 मात्राओं पर यति होती है।
→ इन्होंने यह रचना उस समय के विवाह गीतों में प्रचलित 'अश्लीलता' को दूर करने के लिए लिखी थी।

8. पार्वती मंगल →
→ इस रचना में शिव पार्वती के विवाह से सम्बन्धित कुल 164 पद लिखे गए हैं।
इन 164 पदों में से 148 पदों में तो 'अरुण' या 'मंगल' छंद का प्रयोग किया गया है तथा शेष 16 पदों में 'हरिगीतिका' छंद का प्रयोग किया गया है।
नोट:- (i) अरुण छंद → यह मात्रिक छंद होता है इसके प्रत्येक चरण में 20 मात्राएं होती है तथा क्रमशः 11 व 9 मात्राओं पर यति होती है।
(ii) हरिगीतिका → यह भी मात्रिक छंद होता है इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती है तथा क्रमशः 16 व 12 मात्राओं पर यति होती है।

9. जानकी मंगल →
इस रचना में राम व सीता के विवाह से सम्बन्धित कुल 216 पद लिखे गए हैं।
→ इन 216 पदों में से 192 पदों में तो 'अरुण' या 'मंगल' छंद का प्रयोग किया गया है तथा शेष 24 पदों में हरिगीतिका छंद का प्रयोग किया गया है।

विशेष तथ्य — "मिथिला में रचना किये नहछू मंगल होय।" अर्थात तुलसीदास जी ने रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल ये तीनों रचनाएँ 1582 ई. में अपनी मिथिला यात्रा के दौरान लिखी थी।

10. वैराग्य संदीपनी →

→ ब्रज भाषा में रचित इस रचना में कुल 62 पद लिखे गये हैं।

→ इसमें 62 पदों में 'दोहा', 'सोरठा' व चौपाई इन तीन प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है।

→ इस रचना में संस्कृत भाषा के तत्सम शब्दों का भी अत्यधिक प्रयोग किया गया है।

11 बरवै रामायण →

अवधी भाषा में रचित इस रचना में कुल 69 पद लिखे गए हैं।

→ इन सभी पदों में बरवै छंद का भी प्रयोग किया गया है।

नोट :- बरवै छंद - बरवै भी मात्रिक छंद होता है इसके प्रत्येक चरण में 19 मात्राएँ होती है तथा क्रमशः 12 व 7 मात्राओं पर यति होती है।

→ यह रचना तुलसीदास जी ने अपने मित्र रहीमदास के आग्रह पर लिखी थी।

12 रामाज्ञा प्रश्नावली →

→ यह तुलसीदास जी की ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्धित रचना मानी जाती है।

→ यह रचना इन्होंने पं० गंगाराम ज्योतिषी के कहने पर लिखी थी।

→ इस रचना को सर्वप्रथम सात सर्गों में विभाजित किया गया है। पुनः प्रत्येक सर्गों को सात-सात सप्तकों में विभाजित किया गया है तथा प्रत्येक सप्तक में सात-सात दोहे लिखे गए हैं।

→ इस प्रकार इस सम्पूर्ण रचना में कुल 343 (7×7×7) पद प्राप्त होते हैं।

→